



ISSN: 2394-7519

IJSR 2022; 8(5): 42-45

© 2022 IJSR

www.anantajournal.com

Received: 17-04-2022

Accepted: 22-06-2022

डॉ० प्रतिभा

सहायक प्राध्यापिका, संस्कृत
विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू, जम्मू कश्मीर, भारत

वैदिक ओषधियों में सोमतत्त्वः एक परिशीलन

डॉ० प्रतिभा

प्रस्तावना

शास्त्रों में सोम शब्द का बहुधा उल्लेख मिलता है। जहाँ सोम के ईश्वर, जीव, सूर्य, चन्द्र, सोमलता, सत्य, श्री, ज्योति, पितृलोक, संवत्सर, रात्रि, प्राण, अन्न, ब्राह्मणादि अनेक अर्थ प्राप्त होते हैं इनमें सर्वप्रसिद्ध अर्थ ओषधि है।

निरुक्तकार यास्क ने सोम का अर्थ ओषधि बताते हुए लिखा है - 'ओषधिः सोमः सुनोते: यदेनमभिषुण्वन्ति'।¹ गोपथब्राह्मण में भी लिखा है - 'सोमो ओषधि नामधिराजः' 'सोमो वीरुधापतिः स मामवतु। सुश्रुत संहिता में ओषधि रूप में सोम का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। सुश्रुत का चिकित्सित स्थान का 29वाँ अध्याय विशेष द्रष्टव्य है। वहाँ यह कहा गया है -

सर्वेषामेव सोमानां पत्राणि दश पञ्च च।
तानि शुक्ले च कृष्णे च जायन्ते निपतन्ति च।²
एकैकं जायते पत्र सोमस्याहरहस्तदा।
शुक्लस्य पौर्णमास्यां तु भवेत्पञ्चदशच्छदः॥३
शीर्यते पत्रमेकैकं दिवसे दिवसे पुनः।
कृष्णपक्षं क्षये चापि लता भवति केवला॥४

अर्थात् सभी सोमलताओं की पन्द्रह पत्तियाँ होती हैं और वे चन्द्रकला के अनुसार घटती बढ़ती रहती हैं जिस दिन चन्द्रमा की जितनी कलाएँ होंगी उतने ही उस दिन लता के पत्ते होंगे। शुक्लपक्ष में पूर्णिमा के पूरे पन्द्रह पत्ते हो जाते हैं पुनः उसके पश्चात एक एक दिन में एक एक पत्ता घटते घटते अमावस्या में सभी पत्ते समाप्त हो जाते हैं, केवल लता ही शेष रह जाती है। सुश्रुत में भी स्पष्ट रूप से बताया गया है कि यह सोम वेद पर ही आधारित है। एते सोमाः समाख्याताः वेदोक्तैर्नामिभिः शुभैः॥५

Corresponding Author:

डॉ० प्रतिभा

सहायक प्राध्यापिका, संस्कृत
विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू, जम्मू कश्मीर, भारत

उपर्युक्त वर्णन का आधार है- ऋग्वेद का मन्त्र -

यत्त्वा देव प्रपिबन्ति तत आप्यायसे पुनः।
वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः॥६

अर्थात् हे-सोमदेव। जब तुझे चन्द्रमा की कलाएँ एक एक करके पी लेती हैं तब तुम पुनः बढ़ते हो। वायु सोम की रक्षा करती है। सोम से वर्षा बनते हैं। श्येनवायु सदा सोम के साथ रहती हैं और उसके लिए निरन्तर रस का आहरण करती है। वैद्यकग्रन्थों में सोम के अनेकों नाम वर्णित हैं- अंशुमान्, मुंजवान्, चन्द्रमा, रजतप्रभ, दूर्वासोम, कनीयान्, श्वेताश्व, प्रतानवान्, तालवृन्त, करवीर, अंशुकान्, स्वयंप्रभ, गायत्र, त्रैष्टुभ, पांक्त, जागत, शटर, अग्निष्टोम, रैवत सोम तथा उडुपति आकृति आदि-

अंशुमानऽयगन्धस्तु कन्दवान् रजतप्रभः।
कदल्याकारकन्दस्तु मुंजावौल्लशुनच्छदः॥

रजतप्रभ में कन्द होता है, मुंजवान् कदली के आकार का कन्द तथा पत्ते लशुण की भान्ति होते हैं। चन्द्रमा सुवर्ण के समान चमकीला और जल में उत्पन्न होता है। गरुडाहृत और श्वेताश्व में पीले रंग के पत्ते होते हैं तथा साँप के केंचुल के समान वृक्ष के अग्रभाग में लटके रहते हैं।

सोम की उत्पत्ति-

वेद में सोम की उत्पत्ति पर्वत के ऊँचे स्थान पर बताई गई है

उच्चा ते जातमन्थसो दिवि सदभूम्याददे।⁷

हे सोम! तेरे रस का जन्म ऊँचे द्युलोक में हुआ है।

इद्राग्री आ गतं सुतं गीभिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं
धियेषिता॥⁸

इन्द और अग्ने पर्वतों के ऊँचे शिखर से यह लाया हुआ श्रेष्ठ सोमरस है। तुम इसका पान करो।

वेदों के इन पर्वतों के आधार पर हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने वर्षों तक अथक परिश्रम करके सोमेम के अनेक रहस्यों को जान लिया का। सुश्रुत मुनि ने सोम के सम्बन्ध में बताया है-

हिमालय, अर्बुद, सह्य, महेन्द्र, मलय, श्रीपर्वत, देवगिरि, पारियात्र, विन्ध्य, देवसुन्द तथा तालाब में सोम पाया जाता है। वितस्ता नदी के उत्तर में बहुत बड़े जो पाँच पर्वत हैं उनके नीचे, मध्य में सिन्धु नामक महानद में चन्द्रमा सोम जलकुम्भी की भान्ति तैरता है। मुंजवान् और अंशुमान् भी

चन्द्रमा सोम के समीप रहते हैं। काश्मीर में मानसरोवर में गायत्र त्रैष्टुभ, पाट, जागत, शाक्वर सोम पाये जाते हैं। सोम का वर्ण- वेदों में सोम का वर्ण हरा, भूरा और अरुण रंग का माना गया है। कहीं कहीं इसका श्यामवर्ण भी माना जाता है।

सोमरस की निर्माण विधि-

वेद के अनुसार सोम के पत्तों को पत्थरों पर कूटा जाता है। कूट कर उस का रस निकाला जाता है। रस के अत्यन्त गाढ़ा होने के कारण इसमें पानी मिलाया जाता है। इसमें रेशे आदि होते हैं अतः इसे भेड़ के बालों की छलनी से छाना जाता है। छानते समय वेदमंत्रों का उच्चस्वर में पाठ किया जाता है। छानने के पश्चात् इसमें दूध, दही, धी और मधु मिलाकर इसे और भी लाभप्रद बनाया जाता है। इस प्रकार सोमरस तैयार होता है। पहले इसकी यज्ञ में यथाविधि आहुति दी जाती है पुनः इसे यात्रिक पीते हैं। गोपथब्राह्मण में सोमयाग का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। वहां कहा गया है कि जो व्यक्ति सोमरस को विधिवत् यज्ञ में डालते हैं उन्हें सर्व सुखों की प्राप्ति होती है। सोमयाग के सम्बन्ध में वेद में कहा-

तिस्रो वाचो उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरिरेति
कनिक्रदत्॥⁹

सोमयाग में क्रक्क, यजु० तथा सामात्मक वेदमन्त्रों का उच्चारण किया जाता है। तब गौवों का दूध बढ़ना आरम्भ हो जाता है वे दूध दुहनें के लिए पुकार लगाती हैं। अग्नि में गिरते हुए सोम जलसय होने से चिट्ठिटा शब्द करता हुआ गिरता है।

सोम का स्वाद-

स्वादिष्या मदिष्या पव..... सोमधारया¹⁰
इन्द्राय पातवे सुतः॥¹¹

सोम का स्वाद- स्वादिष्ट है, मदिष्ट है- इसमें माधुर्य है। यह मस्त कर दे ने वाला है। इसका माधुर्य मनुष्य को आनन्दित कर देने वाला है।

सोमरस की सेवन विधि-

कोई भी औषध तभी लाभ करती है जब उसका विधिवत् सेवन किया जाए तथा वैद्य द्वारा निर्दिष्ट परहेज आदि

नियमों का पालन भलीभान्ति किया जाए। सोम रस के सेवन में भी कुछ नियम और सावधानियाँ निर्दिष्ट की गई हैं। ऋग्वेद में दशमण्डल के 85वें सूक्त के तृतीय मन्त्र में कहा गया-

सोमं मन्यते पपिवान्समिंषन्त्योषधिम्।
सोमं यं ब्राह्मणो विदुर्न तस्याश्राति कश्चने॥¹²

अर्थात् जिस सोम औषधि को विधिरहित मूर्ख लोग पीसते हैं और जिसे यम नियमादि साधनों से रहित अयाज्ञिक मनुष्य ने पीकर यह समझा कि मैंने को पीलिया वस्तुतः वह सोम नहीं है क्योंकि जिस को ब्राह्मण लोग सोम समझते हैं उसको कोई यम नियम आदि साधनों से रहित अयाज्ञिक मनुष्य नहीं भोग सकता।

सुश्रुत ऋषि ने सोमरस सेवविधि का विस्तृत वर्णन किया है- सोम सेवन करने वाले मनुष्य को तीन मास तक उत्तमभूमि पर तीनग्रन्थ वाला गृह बनवाकर वमन विरेचन के द्वारा शरीर की शुद्धि करके अग्निष्टोम यज्ञविज्ञान के लाए गए ऋत्विजों द्वारा निचोड़े गये स्वस्तिवाचन मंगलपाठ करके सोने की सुई से फाइकर सोने के पात्र में एक कुड़व प्रमाण रस ग्रहण करा। इसके बाद विना स्वाद लिए एक बार में सोमरस पी लें। फिर आच्मन करके रस निकाले गए अंशुमान कन्द को जल में डालकर यम और नियम के द्वारा मन को एकाग्र का मौन धारण करके मित्रों के साथ विहार करें। अंशुमान सोम को सोने के पात्र में निचोड़ना चाहिए। चन्द्रमा को चांदी के पात्र में। शेष अन्य सोमों को ताम्बा या मिट्टी अथवा रोहितमूग के चर्म से निर्मित बड़े पात्र में निचोड़ना चाहिए।

सोमरस के सेवन का लाभ-

सोम वेद के अनुसार सबसे उत्तम है-

‘परीतो षिंचता सुतं सोमो य उत्तमं हविः’

सोमः पवते जनिता मतीनां दिवो जनिता पृथिव्याः।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत्विष्णोः॥

13

अर्थात् सोम बुद्धियों को बढ़ाने वाला है। सोम द्युलोक पृथिवीलोकअग्नि सूर्यइन्द्र विष्णु सब की शक्तियों को उत्पन्न करता है। सोम उत्साह बढ़ाता है जागृति और चेतना उत्पन्न करता है।

जैसे खेवट नदियों के जल पर से अपने करिश्मों द्वारा नाव पार लगा देता है। उसी प्रकार यह हृदयकारी रस सृष्टि करता हुआ नाड़ियों के बलों को बिना प्रयत्न के चमत्कारी बलों से युक्त कर देता है।¹⁴

वेद में सोम के लिए सहस्रदा और शतदा विशेषण प्रयुक्त किए गए हैं जिनका अर्थ है- सौ और हजार प्रकार की शक्तियों को देने वाला।

सुश्रुत मुनि ने सोम रस पान के विलक्षण लाभ परिगणित किए हैं- औषधीनां पतिं सोममुपयुज्य विचक्षणः। दशर्वमसहस्राणि नवांधारयतेतनुम्। औषधियों का स्वामी सोम का प्रयोग कर बुद्धिमान् मनुष्य दस सहस्र वर्ष तक नवीन शरीर धारण करता है।

नाग्निर्न तोयं न विषं न शस्त्रं नास्त्रमेव च।
तस्यालमायुः क्षपणे समर्थानि भवन्ति हि॥¹⁵

अग्नि जलविष अस्त्र कोई भी सोम सेवन करने वाले मनुष्य की आयु नष्ट करने में समर्थ नहीं होती।

भद्राणां षष्ठिवर्षाणां प्रसृतानामनेकधा। कुंचराणां
सहस्रस्य बलं समधिगच्छति॥¹⁶

साठ वर्ष की आयु वाले भद्रजाति के तथा अनेक बार जिनके मस्तकों का मद चूंचुका है, ऐसे सहस्र हाथियों का बल सोम सेवन करने वाला मनुष्य प्राप्त करता है।

कन्दर्प इव रूपेण कान्त्या चन्द्र इवापरः।
प्रह्लादयति भूतानां मनांसि स महाद्युति॥

रूप में कामदेव के समान तथा कान्ति में दूसरे चन्द्रमा की भान्ति वह महान् तेजस्वी मनुष्य जीवों के मन को प्रसन्न करता है।

सांगोपांगश्च निखिलान् वेदान् विप्दति ऋवतः।
चरत्यमोघं संकल्पो देववद्विलं जगत्।

सोमपायी मनुष्य समस्त वेदों तथा उनके अग् उपाग् के तत्त्वों को जानने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। उसके संकल्प सार्थक सफल होते हैं और वह देवताओं की भान्ति समस्त संसार में विचरण करता है। इस प्रकार सोम रस वास्तव में एक दिव्य औषधि है।

वेद में सोम के अनेक विशेषणों में कुछ विशेषण इस प्रकार से प्राप्त होते हैं- मदिष्या, मरुत्वते, मत्सरः, यस्तेमदः वेष्यः अर्थात् सोमवायी सोम को पीकर आनन्द से, उत्साह से ज्ञूमने लगते हैं। इस प्रकार के सोम के विशेषणों को देखकर कई लोग सोम का तात्पर्य नशीला गर्ह्य पेय करते हैं और अनुमान के आधार पर यह मानते हैं कि प्राचीन लोग ऐसा मादक पेय लेते थे। वस्तुतः ये सभी विशेषण देने वाला। जिस सोम के लिए वेदों में कृतावा, कृतस्य धीर्ति ब्राह्मणों मनीषाम अर्थात् कृतम्भरा बुद्धि को उत्पन्न करने वाला ऐसे विशेषण प्राप्त होते हैं वह कथमपि गर्ह्य पेय सामान्य बुद्धि को भी नष्ट कर देते हैं। समस्त शक्तियों को समाप्त कर देते हैं। वहीं सोम रस शरीर हृदय और आत्मा में दिव्य ऊर्जा तथा विलक्षण बल उत्पन्न करता है। युद्ध में जाने से पूर्व प्राचीन वीर इसका पान करते थे। कृषिमुनि योगी जन इसका सेवन करते थे। कुछ वर्ष पूर्व भारतीय राज्य की ओर से नियुक्त डॉ. रोक्सवरों के हिमाचल प्रदेश में इस सोम का पता लगाया था वह बिल्कुल नशीला नहीं था, उसका स्वाद शिकंजी जैसा था।¹⁷

संदर्भ सूची

1. निरुक्त- ११/१२
2. सुश्रुत संहिता, अध्याय- २९
3. सुश्रुत संहिता, अध्याय- २९
4. सुश्रुत संहिता, अध्याय- २९
5. सुश्रुतसंहिता, चिकित्सास्थानम्, अध्याय २६-३०
6. कृक्. १०/८५/५
7. सामवेद पूर्वार्चिक, ५/१/१
8. सामवेद, उत्तरार्चिक, १/२/३/१
9. साम. ५/१/५
10. साम. ६८९
11. साम. ५/१/२
12. साम. १०/८५/३
13. साम. ५/६/५
14. सामवेद
15. सामवेद
16. साम. ५/९/५
17. निरुक्तभाष्य- डा. चन्द्रमणि विद्यालंकार